

जाम्ना सरुवाथि

2198

I

ASHA ARCHIVES

सौवजायगुगुमनभालकाउगुनगानं सिद्धजुयेमालधकभः
नियायेधुगुकथनंलद्विबलयाये॥धनंलिमाधमुक्तयाचतुर्द
शीपुहुवतयायेब्राह्ममुहुर्देनाउस्नानयायेमालकोनित्यक
मधुनकावतदकोयाराजाहेःश्रीस्वस्थानीपरमेश्वरधकचि
नलपावतयायेधुवतयास्नालजामदयकेसतद्विद्याना १०८
प्रमारायानासकतांदयेकावतयायेचद्विजागर्तनायायेपू

शिमापुहुसतद्विभक्तिसमविद्यकेहामगचाकुवनेतादुधा
नेकेलसकुयेचिथस्थानजजंकाधूपदीपनेवेद्यमधियक्तग्वार
ग्वचदक्षिरासतांदयेकाकीमहादेवपार्दतिनेहामरुजायायेवि
विथंअर्चविथेदक्षिराद्यायेमंदलदयेकेजपसोयपाये
ठावनहुनेठावनधुंनारित्वातकोकायावधुनके॥धनंलिचा
पाअतिसमधिजजकाक्षोस्वितसगोनसहिततयाउपुत्तपलन
यपुत्तपमदतसाकायेयातविथेकारेनदतसामिद्धकायेया

न विद्ये धुलिम दत्त साधकमंतं त कुई छाजुल ७ शु लि पूरुं जि घमाल धकं
रुसी सचु ये के सत द्वि यमंत ये ॥ धु लि ग्वे सन यान वलन याम गोर थ
पूरुं जुई धक आज्ञा दय का श्री पावती न ध गृहि वृत युधे त तये मने लः
धक सपु क विवो ना वृ श्री त्य स्थानी या वि धि स क तां कना मृ तु मंड ल
स छो से हल ॥ ॥ धन लि मृ तु मंड ल या र व ल सा ये ले ताः ॥ का पां द शिरा
दिसा स वृ ल पूर ना म न गर द्यु लि द स्यं ची न धन ग र या स मि प म ग
गा ह्ना ना व ची न ध ये न वृ ल रा ध या स्त्री सती ना म वृ ल रा गी द स्यं ची

न पूर्व ज न स या ज ल न म ति द र्द जु या व ची न ध ये न वृ ल क र्म स ती नु
श्री ग रो स या से वा या ये ग गां र स न ना ये ध कं व न ले ल स ल स गो मा ता
न रि व ज्जा ना वृ व नं ध स स र ती स म वा द ल द तं मो का र व नं सि व भ क या
म ति ह र्ष मा न जु या वृ वा ल ष का या वृ द्य ना ल हि मा त लं ध ल स मि से
ध वृ ल रा म हा ध ति जु लं ॥ धन लि ध वृ वा ल ष या त वे त क्ता ना म क र्मा
जा न गो मा ता न वि व रं गो म य जु ध कं ना म वृ ना वृ त र ॥ ध गो म य जु च द्वा
जा व रं धि र्दी ध या वृ मा न जु लं ध नं ली सि व भ क न म ति द न या तं
पा न या ले ई ड् र्ता ना श्री मा हा दि व या के व ना वि न ति या तं जि य रि ल द्वा
फः नं

माना विज्याहं रक्षायाः पथकं ध्यायात् धनमाहादेवतमायानकापारिक भेषकायासिव
भक्तब्राह्मनयादास्म चोनावभिक्षाकोनं गोमयजुजा किमदुःखालं नामनन्दातं गोमयजु
नमिष्ठा विलम्बनं नासेनमीक्षु फयात मचाया वभ्राय विलं हे गोमयजु हं हसददुःखेले सके
येददुःखज्या धनविका हजुमेमाल हंतं ममदयेमाल ध्यायविसर्गं विज्यातं ॥ ॥ धन
गोमयेजु रवलेमामनचातातलं धन धयेचोचोखुद फुगा हसददया भागजुया वब्राह्म
राखत कल ह्येयास्वया रथासमदया वशिष्ठ शर्म ब्राह्मरायात ज्या धजुल स्याः गोमयजु
कन्यादान विलं ॥ रवचिरकाचादया हं ज्या धव्राह्मरावेला फोनगता रवचनमये स्येति
स्वाचं जिलंदुल्लिख धनविका हंतः लसेल वनं सिमागया गया वसेतं सिमानकाति

नासितं ॥ धनं लि गोमयजु ज्या धव्राह्मरा चदुज्योतिनगरका हिली सभिरा ह्येसदु
हावना वचोतं ॥ धनं लि गोमयेजु या गभसिदलं धन ज्या धव्राह्मरां भिक्षा फिनेध
ककतं ॥ धनं लि गोमयजु जा फिला दया वब्राह्मरा जमजुलं मजीता धं देनका कनक
राज धकं नहुतं जं कोयातं को सरकातं दुधात तलं ॥ धनं लि चद्राव तिना मजुलरा ज
विकाहयाता विलं ह्युया दिनसन क्राजात वदुजुगत विज्यात धकं दे नामा मभिक्षा
फोन विज्यात भाव लिहाम विज्या कथाया वनवराज वदुया उष देस वनं मभिक्षा ध
वदेवनी गोमयजु नंदुका सिलं ॥ धनं लि नवराजन दे नाद जुलं लस ज्या धजि धिजती
के दे नाधमिसेन ध्याया हेवा लपरवरा फो का लालं रवचिनेयात फोन वव ब्राह्मन

हुं हं सिमानकुतिनावसितधापावनदलाजनसेतं ववुयाहारषताबिंशययातावभित्तसं
 स्कारमारकोक्रियायातं ॥ धनविपावतिनदेसियहयास्यपुच्छितसाज्जलामो
 वास्केधनपुष्पीसुसुदुधायारधनगोमयजुअतिदुधधायारअजीनगोमयजुधनसुता
 ववुतंगोमयजुनहतासरांतुतिवायकावकोपुनिसयिजावकावधायामोअजीवरजि
 पापिउदालभावेमालधायारअविभरतंअस्यस्थानीपाविधिसकतांकनंअजदेता
 कगोमयजुनंकुक्ककायावकातयायअकंवनंअविभरतंकोपुनिलसकाजुगे
 तयावस्यगंधिजातं ॥ गोमयजुनयातजोचछातावदेदलंअविभरमदयावभार
 ज्योचवुतयाततलंअनहिवुतयातंवुतेधूनकाविचोनवेलसनवराजुमानावतलं ॥ अन
 लिनवराजुनंमासकाकेधायारछतमलिवाकायेकरछोवधायारमाशनदुध्याद्योधाव
 कायकसछोनी ॥ धनलिदुस्यातोदेवीदेवधेनावदेतंतंदिनीतंवायावलजातिधुका
 लाजा ३

धायारदुहिसधनवकुपुयावहलदेहसममुंदुयानिरसअपसरायावतयाकथास
 वनाववाधानदेनावदुहिसधनवकुपुयाहरदेहससुमुन्दुयातीरसअपसरावुत
 वाकथासकताववाधनदेनावचीधस्वानकाभावनदिनियानविलं ॥ धनलिनंदि
 नितनमचायावस्वानकायाविनयाचानाधकुनिरधयावहाकातिनावहेतं
 धनलिदुस्यातोदेवतावकोनकुपुयावहलदेहससमुंदुयाद
 धुसदुहोकागतावकुतिनवनंदुयानोअमंयाफलनंसंमंदनेनाममागीति
 छरेरवतंसमुदुयातंअमकातंपाविनीजककुवनधियागतिमानिदलंअवस
 धलसकोनं ॥ धनलिनवराजुनंद्रालनभोजनयातकेअकंद्रालरागिमंनराया
 नकलं ॥ धनलिआलदेवकुतलदेवद्रालरागिदुयानापावनयधेजुतमिउया
 लमारविज्यायमालधायारअधुलरासंतिसेतपाविनीयातधारंआस्यस्थानी

पुनयाहकाहपुनसाधयेनपावतिभुतिसुन्दरिजुयामहरी॥ अतलिकविलदेवकुशरदेवने
 नवराजाराजामाननदिनीगावसमसंकनंवनलिनवराजनंदुत्याहोयावकायकरहो
 तं॥ अतलिनंदिनिरानीमगलसिंहलयाजायावराजकुलसयेनावकापायादुःख
 सुखदेनावपरमआनन्दनयेनकंकं॥ श्रीमाहादेवनपावतिकर्न॥ गलमनुष्यन
 अश्विस्थानीवतसयाधूवावनहातकिदेतिअपनिमसगुजमसमातातकपापनाश
 ईजमेधकाजयेयेदसादानसयाकेतिसादानयानाफललायुधुगुजमससुखभोगया
 नावअतकालसकेलासकासजुयूधकंपावतिमातकनाविज्जातां॥ ५॥ ५॥ ५॥ ॥
 इतिश्रीहरिगोरीसंवादेगोमोपाख्यानेस्वस्थानीवतकथासमाप्तम्॥ शुभम्॥
 सम्यत् १६३६ सालमिमावकादि ५ रोज ६ सकोथेपुंकाथस्वस्थानिकाकथाबोयपुंकागुदिनपुरजुम

ॐ नमः ४॥ स्वस्थानीदं ॥ ॥ अथस्वस्थानीवतविधानंलिख्यत ॥
 शात्रम्या॥ स्नानादिचन्दनेनलपनी॥ पूथनहीनमिहवर्धी॥ सूर्यार्घका
 यथरु॥ ॥ अथश्रुत्यादि॥ यथाश्रुगम्ययऊमानीनीमकलपनिवाजा
 धीपनमनिर्वा॥ वाफिननाचनात्मकमवजगदवनेऊन्यरुत्तम
 मरुत्तपाफिणीस्वस्थानीदवतापीरथयथा॥ ॥ श्रीकरुत्तपाफिका
 मनार्थस्वस्थानीवतनिमित्थर्थ॥ ॥ सूर्यार्घनमः॥ पूथी॥ ॐ माहा

शुका जति ॥ रास्ते जाय पुर्वी नमः ॥ पुष्पराज उर्न नमः ॥ सिद्धि जति
ति ॥ वाक्पुर्व वरु ॥ पुष्पराज उर्न नमः ॥ वाक्पुर्व यति वदथ न
नला वाक्पुर्व नमः ॥ यार्घ्य गुत्त नमः ॥ न्यासा र्घ्य पात पुजा ॥ ॐ अख
धु मधुला कां जे ॥ ति गुत्त नमः ॥ न्यासी ॥ अर्घ्य पात पुजा
नला द्वा जा वनी ॥ वक्ता नमः ॥ ॐ नत्वा यामि ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ ॐ त्वम
ॐ आपा अस्मान् ॥ ॐ यस्य कृष्ण ॥ ॐ यदकुन्द ॥ ॐ पद्मानन ॥ ॐ स्थाना

धिविता ॥ ॐ अमर्षथा ॥ ॐ अमिन् ॥ ॐ द्वा प्रादवी ॥ ॐ नत्वा नि ॥ ॐ यु
न ॥ ॐ ॐ देविष्णु ॥ ॐ अग्निमी ॥ ॐ ॐ यत्वा कुत्वा ॥ ॐ अग्नि आया
ॐ ॐ प्रादवी ॥ ॐ उप द्वा ॥ ॐ नदी स्य ॥ ॐ गद्य नीत्वा ॥ ॐ वृहस्पति
ॐ प्रावकाना ॥ ॐ श्री ॥ ॐ अस्माक ॥ ॐ नभाव नृभय ॥ ॐ सफयु
कि ॥ ॐ अस्माक ॥ ॐ निसमस्तदा नार्चन विधे नत्सर्व विध प
जिपुर्व मस्तु ॥ ॥ संपूर्ण कल ॥ यस्तु ॥ अयाय ॥ ॐ दमा मर्न नमः ॥

ॐ आञ्जिघकल्लो ॥ पापकुल्लुत्य ॐ दमासननमः ॥ ॐ ॐ मभवन् ॥
गद्यपद्यनमः ॥ ॐ गद्यनत्वा ॥ अथस्वामिनमः ॥ ॐ वाक्कद्य ॥
स्वस्वतद्गपालायनमः ॥ ॐ अस्मिन्नात् ॥ कपिलादित्यनमः ॥
ॐ आर्यहोमः ॥ कोमाथनमः ॥ ॐ यगवाद्य ॥ ॐ योदित्यनमः ॥
ॐ आद्य ॥ ॐ द्योदित्यनमः ॥ ॐ गानात्रमिन्द्र ॥ ॐ अलाकपा
लित्यनमः ॥ ॐ गद्यनत्वा ॥ पंचककुसदाशिवायनमः ॥ ॐ मंथोका

ना ॥ मासादिपद्मादित्यनमः ॥ ॐ अर्द्धमासा ॥ ॐ मृदुनमः ॥ ॐ श्री ॥
ना ॥ द्रुसकन ॥ ॐ पाथकोन ॥ ॐ स्वापिखा ॥ ॐ विष्णुनमः ॥
धूपदीपपुतिष्ठा ॥ ॐ मनोहृति ॥ उपभोग ॥ ॐ उमान्वितकुक्षु ॥
नभावनकाजयन् ॥ यतीनचकपुष्पासन ॥ ॐ कपुष्पधनदीक्षिपन् ॥
ॐ कपुष्पस्वशिजसिद्धयदी ॥ सर्वकल्याणायुर्ववदाकन ॥ ननान्या
संकाजयन् ॥ ननार्थपागपूजन ॥ ॐ गद्यनत्वा ॥ अथपागुरुदान

कायचन्दनाद्वनपुष्पनिमग्नधनमुदीदधायत॥ आत्मानं सिचयत॥
आत्मचन्दनतमग्न॥ आत्मविजसिपुष्पनिमग्न॥ अर्घपागुजलनवनीसि
चनी॥ ॐ उरुअसिखअजाताहम्यापर्वतवासिनी॥ वक्रआनिसमुत्प
न्नमक्षीयममृतजली॥ ^{धनधनधनधनधनधन} ॥ तलादानपूजनी॥ ॐ नदिनतमग्न॥ ॐ महाकाली
य२॥ पूर्वा॥ ॥ ॐ हृदिहो२॥ ॐ गघापतय२॥ दक्षिण॥ ॐ वृषरासनाय२॥
ॐ स्वीदाय२॥ पश्चिम॥ ॐ दधो२॥ ॐ चन्द्राय२॥ उरुअ॥ ॐ आधानधो

किसहिताय२॥ ॐ सिंहासनाय२॥ ॐ पद्मासनाय२॥ तलाध्यानदवस्त॥
ॐ सुवर्धुवर्धुदीफारुगिनिगुंकमलासनी॥ सिंहपद्मासनरुचिसर्वा
लीकानहयिनी॥ वगुर्हजीमहादवीजटाखंडुमधुनी॥ नीलात्यला
हयीवामदक्षिणवनदीधुनी॥ खमन्त्रमोधनावाडवामदक्षिणयो
कमान्॥ सर्वलक्ष्मीपूजुस्वस्मानोपजमध्वनी॥ ॐ कोंकोंदवीपार्वत्यो
स्वस्मान्येध्यानपुष्पनिमग्न॥ ॥ अथ कक्षापूजा॥ ॐ वक्राह्वनमग्न॥ ॐ वि

सम्बत् १९४२ सारमीती आठरावदी आज सिस्वोमवार
का दिन देरिववु दे देस या जजमान चलाया कोः ग
निमोह सुलग रिमोह सुयेया ४५ रूपैयारा विज
जमान चराया कोमीती सदा

हस्त नक्षत्र

2198	I
------	---

सूत्रं २४॥ उं सदा शिवाय २४॥ उं सम्पूर्णकल ४॥ य २४॥ आवाहनादि ॥ नायु
ऊर्जकास्वान ॥ अथ पापकृष्टपूजा ॥ उं गीगाये २४॥ उं यमुनाये २४॥ उं वा
ग्मये २४॥ उं मनस्वये २४॥ उं चतुष्टय ४॥ य २४॥ उं सफसाग नैत्या २४॥ उं
वृज्जकास्वान ॥ आवाहनादि ॥ अथ गद्यपद्यपूजा ॥ उं गद्यपद्य २४॥
इह नम्याय २४॥ उं कुकेदनाय २४॥ आदु ऊर्जकास्वान ॥ आवाहनादि ॥
स गृनपूजा ॥ उं श्रवस्काभ २४॥ उं वल्य २४॥ उं व्यासाय २४॥ उं हन

मकाय २४॥ उं विहीयताय २४॥ उं कृपाय २४॥ उं पद्मनामाय २४॥ उं मा
केशुयाय २४॥ आसू ऊर्जकास्वान ॥ आवाहनादि ॥ अथ वलिपूजा ॥
उं स्वस्मानक्षरपालाय २४॥ उं कुलाष्टलेनवाय २४॥ उं सर्वथ्य २४॥
पालाय २४॥ हाकु ऊर्जकास्वान ॥ आवाहनादि ॥ अथ लक्ष्मणसपूजा ॥
उं नन्दाय २४॥ उं रुद्राय २४॥ उं कपिलादिपैत्रलक्ष्मणमातृकाया २४॥ आ
सू ऊर्जकास्वान ॥ आवाहनादि ॥ अथ कोमार्गपूजा ॥ उं वक्रात्य २४॥

उमाहृद्यर्थे २४॥ उं कोमार्थे २४॥ उं वेष्मर्थे २४॥ उं वाजाङ्गे २४॥ उं वृन्दाहृद्ये २४॥
उं त्रामेष्वर्थे २४॥ उं महालक्ष्म्ये २४॥ आदुर्जकास्वान्॥ आवाहनादि ॥
अथ सूर्यादि ईश्वरपूजा ॥ उं आदित्यादि नवग्रहार्थे २४॥ उं क्वा
नदं वनार्थे २४॥ उं कुलदेवतार्थे २४॥ पञ्चकाम्बान्॥ आवाहनादि ॥
अथ मूलदेवता पूजा ॥ उं मध्यस्वस्मानीदर्थे नमः ॥ उं ब्रह्मास्मिन् २४॥
उं वाङ्मय २४॥ उं वाङ्मय २४॥ उं आद्यवसुनिष्ठमाय २४॥ उं वज्र

य २४॥ उं पापिन्त्ये २४॥ उं नवजाजाय २४॥ उं विवरुदाय २४॥ उं मनी २४॥
उं उमासहस्रजाय २४॥ उं अश्विन्यादि नक्षत्रार्थे २४॥ उं वृन्दादि लोक
पालार्थे २४॥ उं विष्णवेति आवाहनाय २४॥ उं मन्वादि द्वादशमासि २४॥
उं प्रतिपदादि तिथिर्था २४॥ उं आदित्यादि नववायवार्थे २४॥ हृदयादि
अथ देवतस्नानं ॥ पादौ ॥ उं गीर्ध्रपूर्याक्षर्युक्ता कुलपारुक्षित्ति ॥ पा
दार्ध्रकल्पितं रुक्मा गृहाद्यप नमः ॥ अर्घ्यं ॥ उं अर्घ्यपारुक्षितं
नायं हलपुष्पसमन्वितं ॥ अर्घ्यं गृहाद्यादवधारुक्मादुर्ध्वं विधाय

आचमनी॥ उं कर्पू जाणी नम नलि ४४ी तली नीर्मली उं ली॥ गंगाय न्मु समा
नी यठहानाचमनीयकी॥ पं० अमृतस्वानी॥ उं पं० अमृतमया नीर्म
पयादधिष्ठे तं मधु॥ ४१ क जासहि तं द व स्नानार्थ प्रतिगृह्णीती॥ बुद्धा
दकस्नानी॥ उं गंगामदिसनिरुपस्थे ४॥ लिली ४॥ तला इवी स्नान समपि
तं गुर्या गृह्णीती ह ज व लल॥ वंदनं॥ उं चन्दनं मलया इह गं भोल ठ
मलना ४॥ गृह्णीती गिनि जा उं नु नन्दिनी पीयतामिम॥ सीट्टे ॥ उं सी
इजनागर्त रुतं हि जा तं कदा कं पठा॥ पूतं धृतं नरु॥ लि ४॥ पुनी दूमवर्म

गल॥ वरु॥ उं वरु गृह्णीती दवी को० यमिदमुरुमी॥ पद रुद वद व
ठि विविगु वजद विवि॥ अरु॥ उं अरु तं जागना ४॥ यना नादे गुवि
दायकी विरुवध्वनि प्रयत्नं सर्वयामिमवर्द्धनी॥ दाहालस्वानी॥ अं
पदहियमादेदि सोला ४॥ धी हिलक्षिनी॥ पुगादहि धर्नदहि इ
वी पुष्पनभा सुभा॥ निना उं उं का॥ उं यद्वा पवी तं मुनि लि ४॥ सुथ
तं गिगुधी रुमी॥ पठा कि तं मया दवी गृहाक्षमजर्वदिन॥ जाति पु
ष्पी॥ उं जाति पुष्पसुगंधं च धनधान्यविवर्द्धनी द० सोवर्धिका पुन्य जा

निपुष्पपतिगृष्टकी॥ पद्मी॥ उं ठा न पण मया दह लक्ष्मी ये स्मिं यवस्मि
ता॥ सफ ऊन्मा किं न पापं चकवर्हि पदं लक्ष्मी॥ उत्पली॥ उं ऊनि मुत्प
लपद्मानि कला दकुमुदसुथा॥ आद्याही सर्वदं वातां उत्पली पतिगृष्ट
की॥ दमनी॥ उं दमनी मदन नाहू नं सुगंधं नरु धिती दजिदनाशनं
दवं आ आर्य सर्व कामदी॥ जम्पकी॥ उं घाही सदनं काथन दं वाताम्
द्वियस्मिती॥ दमनी वधिर्क पुष्पं जम्पकी सतिगृष्टकी॥ तास्वान॥
उं माता कुधु कुयथी लि खे कितां दवपुजिता॥ मालति मुनि पुष्पा

धोई माता दत्त पावनी॥ कतुलि कपाम धरुज गजि यला लव
दकाय॥ रुली॥ उं रुली च विविध का कद जी पध सादिकी॥ उं रुली
पुदिम नर्म गृहाक्ष पज भव ज॥ नेवदी॥ उं नेव दी गि नि ऊ पुतः
माद हिम नदी धिवा॥ घृत्तु का के नर्म युकी पद रु मिदमी ध्वनि॥
नी वृली॥ उं नाम्बुली गृष्टा तीद विरु किं भ मुचलां कुत्र॥ स्वर्ण पवर्ण
रुल दं न वा र्थ दं समर्पिता॥ ॥ धूप॥ उं वनस्य निज भात्यनी नाना

गन्धेस्तुसंयुता। आद्ययः सर्वद्वान्ती धृषायं प्रतिगृह्णन्ती॥ दीपं
उं सुपका॥ महादीपं सर्वगतिमिनापदी सवाद्यायां ननंशा
तिदीपायं प्रतिगृह्णन्ती॥ ॥ भाहनि रुपा॥ ॥ अर्घ्यं पदापयत् ॥
भीखसदास्वासां साइडरुमच नया अर्घ्यविय॥ ॥ अं अद्यवनादे
न्यादि॥ ॥ अं अद्यादि॥ ॥ यथाहमग यजुमातीनां सकलपनिवा

नाहं आयुना भाव्यजनधनसंमानलक्ष्मीवृद्धिर्दीर्घायुत्त्व
लपुष्टुरुभाऊ न कल्याणपनमनीवाहमपाफिच नाजनात्मक
सर्वजगदचनजन्यरुलसमरुलपाफिहीस्वस्कातीदवीसु
पथान्नदानायथा॥ ॥ सुकाकुरुलपाफिकामनयास्वस्कातीयुग
संपूर्णार्थं हीस्वस्कातीदवनाथे ॥ दमर्घनिवदयामिस्वाहा॥

न्यासलिकाया॥ मधिपादं नालवद्वाया॥ नाशो जागवर्ध॥ वनस्य
 प्रयादिनशां पवादयन्॥ ॐ निस्रस्का नीवतर्मपृष्ठुम् ॥ ॥
 मवन्ते १२ पोयधुक्क प्रतिपदावृहस्पतिवा नकुङ्कुथायधु
 नकाशीस्वस्का नीवतयासद्वयं नाकुं याशी जलभा पोतनस्वा
 थ्य॥ श्रीस्वस्का नीदवनामपक्षान्तास्तु॥ शुभम् यातंसर्वदा ॥ ॥

श्रीस्यस्थानौ नमः॥ तनमापि महेशानं गरो शं षत्पुदयं॥
 स्वदुनी न्वप्रारम्भववदाम्बहं॥ ॥ द्वापां वैलास शिरवरेना
 ला वानु विराजमानजु याव कोर थल काम वेनु दयाव कोर
 कलावक्षदतदयाव कोरः शुभ विजतायाना उगुदयाव कोर शुप
 र्वतस सकलं सियाव विज्या कलाश्रीया वर्ती दे विने सानं हस्तजु
 पाव श्रीयसो म श्रीकुमारजवववनपाव सुवन स्व विज्या

थे वरा जगत्सर्व गोदमिषा कनारु आनन्दन विज्ञात श्री पार्वीति
न श्री महादेव्या के वित्त सिपातं ॥ हे परमे श्वर हृत्ते पोत सकता
सिपा विज्ञा क हृत्ते पोतं जित वि लोक स दुक्त मजुया व शैंगु माहा उत
मनु चर्मया सिनं चर्मगु हृत्ते पोतया मति प्रीति गु चर्म वत सकस्या
मंया मजोग्य गु जिन कनारु विय माल ध कं वित्त सिपात व श्री माहा
देवत आ सादय कलं हे सा धु पावर्ति देवि हृत मति कने मत जुल

मास जिन कने ध कं आ सा दय कलं हे पावर्ती हृत्ते सिपा मिला तपु
वत दको या सिनं न चं गु गु मनं माल पा उ गु ति श्रय नं विशी गु श्री ३
स्वस्थानि नाम जुया चो गु वत पो व गु हृत्ते पा पू शि मा पु नुं ति स्ये मा
पा स्ना तु य प माल नं सहित नः श्री मूर्च्छा घात सहि च्या खात या ना
मत वि माल नया आयू वहु मान जु ज माल ध कं फि आ र्च वि ये सो
जया ये धु लि धु स्ये ति श्री माहा देव पूजा पाये धु प दीप अर्घ वि ये